

(घत्ता)

जय पारस-देवं, सुर-कृत सेवं, वन्दत चरण सुनागपती ।  
करुणा के धारी, पर-उपकारी, शिव-सुखकारी कर्म हती ॥

ॐ ह्रीं श्रीपाश्र्वनाथजिनेन्द्राय गर्भजन्मतपोज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकप्राप्ताय  
जयमालापूरार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(रोला)

जो पूजै मन लाय, भव्य पारस प्रभु नित ही ।  
ताके दुख सब जाँय, भीति व्यापै नहिं कित ही ॥  
सुख-सम्पत्ति अधिकाय, पुत्र-मित्रादिक सारे ।  
अनुक्रम सों शिव लहे, 'रतन' इम कहें पुकारे ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

### भजन

चाह मुझे है दर्शन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥टेक॥  
वीतराग-छवि प्यारी है, जगजन को मनहारी है ।  
मूरत मेरे भगवन की, वीर के चरण स्पर्शन की ॥१॥  
कुछ भी नहीं शृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिये ।  
फौज भगाई कर्मन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥२॥  
समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की याद दिलाती है ।  
नासादृष्टि लखो इनकी, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥३॥  
हाथ पे हाथ धरे ऐसे, करना कुछ न रहा जैसे ।  
देख दशा पद्मासन की, वीर के चरण स्पर्शन की ॥४॥  
जो शिव-आनन्द चाहो तुम, इन-सा ध्यान लगाओ तुम ।  
विपत हरे भव-भटकन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की ॥५॥